हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाह सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई

हज़रत इमाम अली इब्ने मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम (जिन्हें कभी–कभी उनके लक़ब हादी के नाम से भी याद किया जाता था) नवें इमाम के साहबज़ादे थे। आप 212 हि0 मुताबिक़ 827 ई0 में मदीने में पैदा हुए, और शीआी रिवायात के मुताबिक़ अब्बासी ख़लीफा मुअ़तिज़ के ज़रिए ज़हर दिये जाने से 254 हि0 मुताबिक़ 868 ई0 में आपकी शहादत वाक़े हुई।

आप सात अब्बासी ख़लीफा मामून, मुअ़तसिम, वासिक़, मुतवक्किल, मुन्तसिर, मुस्तईन और मुअ़तिज़ के ज़माने के थे। वह मुअ़तसिम का दौरे ख़िलाफत था जब 220 हि0 मुताबिक़ 835 ई0 में ज़हर दिये जाने से बग़दाद में आपके बुज़ुर्ग बाप का इन्तेक़ाल हुआ। उस वक़्त हज़रत इमाम अली इब्ने मुहम्मद तक़ी मदीने में थे। वहाँ आप हुक्मे ख़ुदावन्दी और अपने पेशरवों के फैसले के मुताबिक़ इमाम मुक़र्रर हुए। आप मुतवक्किल के दौरे ख़िलाफत तक मदीने में मुक़ीम रहे और मज़हबी उलूम के दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे।

243 हि0 मुताबिक़ 857 ई0 में इमाम पर लगाए गए एक झूठे इल्ज़ाम के नतीजे में मुतवक्किल ने अपने एक सरकारी अफसर को हुक्म दिया कि वह इमाम को मदीने से सामरा बुलाए जो कि उस वक़्त उसकी राजधानी था। उसने ख़ुद इमाम (अ0) को ख़ुश अख़लाक़ी और लुत्फ व इनायात के इज़हार से भरा एक खत लिखा कि आप राजधानी आ जाएँ ताकि यहाँ आपस में मींटिंग की जा सके। सामरा पहुँचने पर वहाँ ज़ाहिरी इनायात और ताज़ीम के साथ आपका इस्तेक़बाल किया गया। साथ ही साथ मुतवक्किल ने हर मुमकिन तरीक़े से इमाम को तकलीफ देने और उनकी बेइज़्ज़ती करने की कोशिश भी की। कई बार उसने इमाम (अ0) को क़त्ल करने या उनकी तौहीन की ग़र्ज़ से उन्हें अपने सामने पेश करवाया और उनके घर की तलाशी ली।

अहलेबैते अतहार (अ0) के बारे में अपनी दुश्मनी में मुतवक्किल दूसरे अब्बासी ख़लीफा से कुछ कम न था। वह हज़रत अली (अ0) का ख़ास तौर से मुख़ालिफ था। और अलल एलान उनका इन्कार किया करता था। उसने एक मसख़रे को हुक्म दिया था कि वह बड़ी–बड़ी महफिलों में हज़रत अली (अ0) का मज़ाक़ उड़ाया करे।

237 हि0 मुताबिक़ 850 ई0 में उसने हुक्म दिया था कि कर्बला में वाक़े हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के रौज़–ए–अक़दस और उसके चारो तरह बने हुए मकानों को ढा दिया जाए। इसके बाद इमामे हुसैन (अ0) के रौज़े पर नदी का रुख मोड़ दिया गया। उसने इमाम (अ0) के रौज़े की ज़मीन पर हल चला कर उस पर खेती करने का हुक्म दिया ताकि आपकी क़ब्र का कोई निशान बाक़ी न रहे। मुतवक्किल की ज़िन्दगी में हिजाज़ के अन्दर औलादे अली की हालते ज़ार इतनी दर्दनाक हो गई थी और इस मन्ज़िल को पहुँच गई थी कि

बक़िया पेज 14 पर

साल तक पढ़ाई का सिलसिला चालू रखा। दूसरी कलाएँ सीखने में भी मेहनत की। उनकी वफादार बराबर वाली बीवी ने उन्हें इस्फेहान में आराम और चैन दिये और एक मेहरबान दोस्त, चाहने वाली साथी, बेहतरीन सेवा भाव वाली (पतिवृत्ता) की तरह अपने पति की तरक़्क़ियों की ज़मीन बराबर की। इस तरह इस्फहान में जो पाँच साल बिताये उनमें वे बड़े मन से और सुख–चैन से पढ़ाई–लिखाई में जुटे रहे कि कभी–कभी रात–रात भर पढ़ाई में लगे रहते थे। जब कोई और काम न होता ता कुर्आन याद (हिफ़्ज़) करते। यूँ इस्फेहान रहते पूरा सूरा 'बराअत' याद कर लिया जो ज़िन्दगी भर न भूले और बराबर उसकी तिलावत (पाठ) करते रहे।

तफ़सीर 'अल–मीज़ान' नाम से तफ़सीर (कुर्आन–व्याख्या) लिखने वाले तबातबाई मरहूम अपनी कुछ ज्ञान से जुड़ी (इल्मी) और आध्यात्मिक (रूहानी) तरक़्क़ियों और कमालों को अपनी बीवी की देन बताते हैं।

बेशक शादी से सुख–चैन मिलता है और इससे क़ाबिलियत, सलाहियत, वैभव के अखुँवे फूटते हैं। **(जारी)**

बक़िया ....हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

अपना सर ढाँकने के लिए बीबियों के पास चादरें तक नहीं रही गयीं थीं उनमें की बहुतसे ख़वातीन के पास सिर्फ एक चादर थी जिसे वह नमाज़ के वक़्त ओढ़ लिया करती थीं। इसी तरह का दबाव औलादे अली (अ0) के उन लोगों पर भी डाला जा रहा था जो मिस्र में मुक़ीम थे। दसवें इमाम को बड़े सब्र व बर्दाश्त के साथ उस वक़्त तक अब्बासी ख़लीफा की अज़िय्यत और क़हर बर्दाश्त करना पड़ा जब तक कि ख़लीफा का इन्तेक़ाल नहीं हो गया और जिसके बाद मुन्तसिर, मुस्तईन और आख़िर में मुअ्तिज़ ख़लीफा नहीं हो गए और जिनके इशारे से इमाम (अ0) को ज़हर देकर शहीद नहीं कर दिया गया।

□□□

बक़िया ......हज़रत अबुतालिब अ0 की वफ़ात

अगर मौत का फरिश्ता मुझको मोहलत देता तो मैं और कुछ हादसों का मुक़ाबला करता। और उनकी हिमायत करता। याद रखो कि जब तक तुम मुहम्मद (स0) की पैरवी करते रहोगे ख़ैरियत से रहोगे इसलिए इताअत करते रहो ताकि हिदायत पाओ।

बेअ्सत के दसवें साल जनाबे अबुतालिब (अ0) का मक्का में इन्तेक़ाल हुआ। अमीरुलमोमिनीन (अ0) तशरीफ लाए बारगाहे नबुव्वत में ख़बर की, इरशाद हुआ जाओ उनके ग़ुस्ल व कफन का इन्तिज़ाम करो खुदा उनकी मग़फिरत करे और रहमत के ठिकाने में जगह दे।

इब्ने अब्बास नक़ल करते हैं कि जनाबे अबुतालिब का जनाज़ा देखकर सरवरे काएनात (स0) ने फरमाया चचा आपने ख़ूब हक़ अदा किया, ख़ुदावन्दे आलम इसका अज्रे कामिल अता करे।

हज़रत (अ0) के ग़म व अफसोस का अन्दाज़ा इस से हो सकता है कि आप (स0) ने इस साल का नाम ''आमुलहुज़्न'' रखा। यानी ग़म व अफसोस का साल। □□□